## *जीवन के लिए एक अच्छी नींव कैसे बनाएँ*

**राजा दाऊद (भाग 1) — शुरुआत**

***रविवार का संदेश*, 06 *सितंबर*, 2026**

हम राजा दाऊद के जीवन-चरित्र पर अध्ययनों की एक श्रृंखला शुरू कर रहे हैं।

यह एक 70-वर्षीय जीवन यात्रा है।

हमारा लक्ष्य उनके जीवन, उनकी बुलाहट, निर्माण, चुनौतियों, नेतृत्व, उनकी सफलताओं और विफलताओं, उनके आराधना के जीवन आदि पर गौर करना है और ऐसी अंतर्दृष्टि प्राप्त करना है जिसे हम अपने जीवन और परमेश्वर के साथ चलने में लागू कर सकें। हम अपने परमेश्वर और उसके मार्गों के बारे में सीखना चाहते हैं, और यह भी सीखना चाहते हैं कि हम अपने परमेश्वर के साथ और अधिक गहराई से कैसे चल सकते हैं।

### *पृष्ठभूमि*

इस अध्ययन में दी गई सभी तिथियां अनुमानित हैं।

- दाऊद, जिसका इब्रानी अर्थ "प्रिय" या "प्रियजन" है।
- जन्म 1040 ईसा पूर्व (B.C.)।
- यिशै का पुत्र, यहूदा के गोत्र में, बेतलेहेम में जन्म।

- 8 भाइयों में सबसे छोटा। उसके 7 बड़े भाई और कम से कम 2 बहनें थीं (1 शमूएल 16:10-11; 1 इतिहास 2:16)।
- भविष्यद्वक्ता शमूएल द्वारा अभिषेक, संभवतः तब जब वह लगभग 17-20 वर्ष का था।
- राजा बनने की आयु: 30 वर्ष।
- उसका शासनकाल लगभग 1010-970 ईसा पूर्व।
- यहूदा पर शासन: 1010-1003 ईसा पूर्व (7 1/2 वर्ष)
- संयुक्त इज़राइल पर शासन: 1003-970 ईसा पूर्व (33 वर्ष)
- कुल शासन: 40 वर्ष
- 70 वर्ष की आयु में निधन।

बाइबल के संदर्भ: 1 शमूएल 16-31; 2 शमूएल 1-24; 1 राजा 1-2; 1 इतिहास 11-29, दाऊद के भजन (भजन संहिता) और नए नियम के संदर्भ।

## *प्रारंभिक जीवन और अभिषेक*

आज हम उसके प्रारंभिक जीवन और अभिषेक पर ध्यान केंद्रित करेंगे और इससे अंतर्दृष्टि प्राप्त करेंगे।

**एक चरवाहे के रूप में दाऊद**

दाऊद यिशै का सबसे छोटा पुत्र था, और उसे अपने पिता की भेड़ों की देखभाल का काम सौंपा गया था। इसलिए उसने अपना प्रारंभिक जीवन एक चरवाहे के रूप में शुरू किया।

**1 शमूएल 16:11**

फिर शमूएल ने यिशै से कहा, "क्या सब जवान आ गए?" उसने कहा, "नहीं, सबसे छोटा अब भी रह गया है, और वह भेड़ों को चरा रहा है।" शमूएल ने यिशै से कहा, "उसे बुलवा भेज; क्योंकि जब तक वह यहाँ न आए, तब तक हम खाने को न बैठेंगे।"

**दाऊद अपने झुंड की रक्षा करता है**

दाऊद ने अपनी जिम्मेदारी को बहुत गंभीरता से लिया। बाद के चरण में दाऊद द्वारा कही गई बातों से हमें पता चलता है कि उसने जंगली जानवरों (जिसमें शेर और भालू शामिल हैं) से अपनी भेड़ों की रक्षा की, जो उसके साहस और परमेश्वर पर उसकी निर्भरता को दर्शाता है।

**1 शमूएल 17:34-36**

34 दाऊद ने शाऊल से कहा, "तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियां चराता था; और जब कोई शेर या भालू आकर झुंड में से मेम्ना उठा ले जाता,

35 तो मैं उसके पीछे जाकर उसे मारता, और मेम्ने को उसके मुंह से छुड़ा लाता था; और जब वह मुझ पर झपटता, तो मैं उसके बाल पकड़कर उसे मार डालता था।

36 तेरे दास ने शेर और भालू दोनों को मारा है; और यह खतनारहित पलिश्ती भी उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।"

**भविष्यद्वक्ता शमूएल द्वारा अभिषेक**

एक युवा चरवाहे के रूप में ही शमूएल द्वारा दाऊद का राजा के रूप में अभिषेक किया गया था, क्योंकि परमेश्वर ने शाऊल को उसकी अवज्ञा के कारण अस्वीकार कर दिया था। इस समय दाऊद की आयु 17-20 वर्ष के बीच रही होगी।

**1 शमूएल 16:1,7,12-13**

1 फिर यहोवा ने शमूएल से कहा, "मैं ने तो शाऊल को इस्राएल के राज्य पर से तुच्छ जाना है, तो तू कब तक उसके लिये विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर कर चल; मैं तुझे बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुन लिया है।"

7 परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, "उसके रूप और उसके डील-डौल पर दृष्टि न कर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।"

12 तब वह उसे बुलवा लाया। उसके गाल लाल थे, और उसकी आंखें सुन्दर, और उसका रूप देखने में अच्छा था। तब यहोवा ने कहा, "उठकर इसका अभिषेक कर; क्योंकि यही वह है।"

13 तब शमूएल ने तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामा को चला गया।

***मुख्य अंतर्दृष्टि***

यहाँ दाऊद के प्रारंभिक जीवन से ली गई कुछ मुख्य बातें दी गई हैं:

**#1, परमेश्वर के हृदय के अनुसार एक मन**

दाऊद का सबसे पहला संदर्भ (हालांकि सीधे नाम से नहीं) 1 शमूएल 13:13-14 में मिलता है जब भविष्यद्वक्ता शमूएल घोषणा करता है कि परमेश्वर ने अपने हृदय के अनुसार एक व्यक्ति को खोज लिया है।

**1 शमूएल 13:13-14**

13 शमूएल ने शाऊल से कहा, "तू ने मूर्खता का काम किया है। तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा नहीं मानी। नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएल पर सदा के लिये स्थिर करता।

14 परन्तु अब तेरा राज्य नहीं बना रहेगा। यहोवा ने अपने हृदय के अनुसार एक व्यक्ति को खोज लिया है, और यहोवा ने उसे अपनी प्रजा पर प्रधान होने की आज्ञा दी है, क्योंकि जो आज्ञा यहोवा ने तुझे दी थी उसे तू ने नहीं माना।"

इब्रानी वाक्यांश "उसके अपने हृदय के अनुसार एक व्यक्ति" का शाब्दिक अर्थ है: "उसके हृदय के अनुसार एक व्यक्ति" या "उसके हृदय के समान एक व्यक्ति।"

इसका मतलब यह नहीं है कि दाऊद एक सिद्ध व्यक्ति था जो कभी गलती नहीं करता।
बल्कि यह एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जिसका मन कोमल था और परमेश्वर के विचारों और उद्देश्यों की ओर झुका हुआ था। एक ऐसा व्यक्ति जिसकी इच्छा परमेश्वर की खोज करना, परमेश्वर को सुनना और उसकी इच्छा पूरी करना था।

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि दाऊद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में गढ़ा जा रहा था जिसका चरित्र, इच्छाएं, जुनून, निर्णय और निष्ठा परमेश्वर की ओर, परमेश्वर की सेवा करने और उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए थी।

दिलचस्प बात यह है कि यह बात राजा शाऊल के विपरीत घोषित की गई है, जो परमेश्वर की निरंतर अवज्ञा करने, अपनी इच्छा पूरी करने, लोगों को खुश करने की कोशिश करने, पश्चाताप करने और जिम्मेदारी लेने के बजाय दूसरों को दोष देने की ओर बढ़ रहा था, जिसके परिणामस्वरूप अंततः उसे पूरी तरह से विफलता मिली।

प्रेरित पौलुस 1 शमूएल 13:14 का संदर्भ देते हुए कहता है:

**प्रेरितों के काम 13:22**

और उसे हटाकर उसने उनके लिये दाऊद को राजा होने के लिये खड़ा किया, जिसके विषय में उसने गवाही दी: 'मैं ने यिशै के पुत्र दाऊद को अपने मन के अनुसार पाया है, जो मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।'

दाऊद कोई सिद्ध इंसान नहीं था, लेकिन वह एक ऐसा इंसान था जिसका मन सही जगह पर था - परमेश्वर में - परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के इरादे से।

परमेश्वर द्वारा शमूएल को दाऊद के 7 बड़े भाइयों को नजरअंदाज करने के लिए कहने का कारण यह था कि परमेश्वर मन को देख रहा था। (1 शमूएल 16:6-7)। दाऊद के हृदय में कुछ ऐसा था जिसने परमेश्वर का ध्यान आकर्षित किया। परमेश्वर में दृढ़ एक हृदय, आने वाले समय में बनने वाली हर चीज़ की नींव है।

**#2, नियति के बीज (Seeds of Destiny)**

हमारे पास राजा शाऊल के सेवकों में से एक द्वारा दाऊद के बारे में किया गया यह उल्लेख है:

**1 शमूएल 16:18**

तब जवानों में से एक ने कहा, "सुन, मैं ने बेतलेहेमी यिशै के एक पुत्र को देखा है, जो वीणा बजाना जानता है, और शूरवीर और योद्धा भी है, वह बात करने में बुद्धिमान और रूपवान है; और यहोवा उसके साथ है।"

दाऊद के बारे में दिए गए विवरण पर विचार करें - छह प्रमुख विशेषताएं:

- वीणा बजाने में कुशल
- शूरवीर (साहसी व्यक्ति)
- योद्धा (युद्ध का जानकार)
- बातचीत में बुद्धिमान (यह भजन रचने की उसकी क्षमता का भी संदर्भ हो सकता है)
- देखने में सुन्दर
- यहोवा उसके साथ है

ये वे विशेषताएं थीं जो दाऊद के जीवन में बहुत जल्दी स्पष्ट हो गईं। उसके आस-पास के लोगों ने इन्हें देखा और पहचाना। हम इन्हें "नियति के बीज" कहते हैं, वे चीजें जो परमेश्वर ने आप में "बीज रूप" में रखी हैं, जिन्हें पोषित और विकसित करने की आवश्यकता है, और आपके जीवन के लिए परमेश्वर के कार्य को पूरा करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

आपके प्रारंभिक वर्षों के दौरान परमेश्वर ने आप में जो चीजें रखी हैं, वे आपके जीवन के कार्य के लिए बीज हैं। हम जानते हैं कि दाऊद अंततः राजा बना और उसने महान सैन्य विजयों का नेतृत्व किया। वह इज़राइल का मधुर भजन गाने वाला भी बना (2 शमूएल 23:1)।

**नीतिवचन 18:16**

मनुष्य की भेंट उसके लिये मार्ग खोल देती है, और उसे बड़े लोगों के सामने पहुँचाती है।

भेंट (Gift) = उपहार, इनाम, चढ़ावा, जो आप देते हैं।

हम इसे शाब्दिक रूप में समझते हैं - जब आप किसी को कुछ देते हैं। लेकिन हम अपनी प्रतिभा और कौशल भी "दे" सकते हैं। दाऊद में देखी गई इन विशेषताओं ने उसके लिए राजा के दरबार में आने का द्वार खोल दिया।

राजा शाऊल के दरबार में एक संगीतकार के रूप में सेवा करने के लिए लाए जाने पर दाऊद अपने किशोरावस्था के अंतिम वर्षों या 20 के दशक की शुरुआत में रहा होगा। दाऊद राजा के रूप में प्रवेश करने से पहले महल में एक सेवक के रूप में प्रवेश करता है।

समझें कि नेतृत्व के स्थानों में कदम रखने से पहले आपके उपहार आपके लिए सेवा के द्वार खोलते हैं। हम अक्सर जो गलती करते हैं वह यह है कि हम पहले अपने उपहारों के साथ सेवा करना सीखे बिना, उनके कारण नेतृत्व के स्थानों की इच्छा करते हैं।

**#3, गुमनामी में गढ़ा जाना**

हम दाऊद के प्रारंभिक जीवन से यह भी सीखते हैं कि परमेश्वर हमें जीवन के कार्य के लिए छिपे रहने और गुमनामी में तैयार करता है।

जब भविष्यद्वक्ता शमूएल मिलने आया तो दाऊद के अपने पिता ने उसे घर पर रखने के लिए "इतना महत्वपूर्ण" नहीं माना।

## 1 शमूएल 16:11

फिर शमूएल ने यिशै से कहा, "क्या सब जवान आ गए?" उसने कहा, "नहीं, सबसे छोटा अब भी रह गया है, और वह भेड़ों को चरा रहा है।" शमूएल ने यिशै से कहा, "उसे बुलवा भेज; क्योंकि जब तक वह यहाँ न आए, तब तक हम खाने को न बैठेंगे।"

हम विवरण नहीं जानते हैं, लेकिन इस बात का कोई संकेत नहीं है कि दाऊद ने इस बात पर जोर दिया हो कि जब यिशै और उसके पुत्रों को शमूएल से मिलने के लिए आमंत्रित किया गया था, तो उसे भी सभा में उपस्थित होना चाहिए। हम बस कल्पना

कर सकते हैं कि जब यिशै को शमूएल से आमंत्रण मिला तो यिशै के सभी बेटे कितने उत्साहित रहे होंगे। दाऊद ने भी इस बारे में सुना होगा। लेकिन वह उस बलिदान में शामिल नहीं हो सका और इसके बजाय भेड़ों को चराने के लिए छोड़ दिया गया। दाऊद ने सभा में जाने के लिए लड़ाई नहीं की। वह इस बात से नाराज नहीं हुआ कि उसे उसके भाइयों के साथ नहीं ले जाया गया।

दाऊद अपने काम (भेड़ों की देखभाल करने) में विश्वासयोग्य रहा, और परमेश्वर ने उसे भविष्यद्वक्ता शमूएल के माध्यम से बुलाया। भविष्यद्वक्ता शमूएल द्वारा राजा होने के लिए अभिषेक किए जाने और राजा के दरबार तक पहुंचने के बाद भी - वह एक सेवक के रूप में सेवा में बना रहा - अपने पिता के लिए एक चरवाहा, राजा के लिए एक संगीतकार। दाऊद ने खुद को किसी प्रमुख स्थान पर धकेलने या ऊंचा उठाने की कोशिश नहीं की।

दाऊद को राजा के रूप में अपनी बुलाहट में कदम रखने की कोई जल्दी नहीं थी। उसने परमेश्वर को प्रक्रिया पूरी करने दी।

अपनी भविष्यद्वाणी की नियति में कदम रखने की जल्दी न करें। अपने वर्तमान कार्य में विश्वासयोग्य बने रहें, तब भी जब आपको पहचाना नहीं जाता, या आप पर ध्यान नहीं दिया जाता। परमेश्वर आपकी वफादारी पर ध्यान देना कभी नहीं भूलता।

गुमनामी में होने वाले अनुभव और सीख हमें उस समय के लिए तैयार करते हैं जब परमेश्वर हमें दृश्यता (visibility) में लाता है। दृश्यता में व्यक्ति के प्रकट होने से पहले, छिपे रहने ने व्यक्ति को गढ़ा।

### *दाऊद के भजन*

150 भजनों में से 73 पारंपरिक रूप से उनके इब्रानी शीर्षकों द्वारा दाऊद से जुड़े हैं। एक छोटा समूह विशेष रूप से भजन 3, 7, 18, 34, 51, 52, 54, 56, 57, 59, 60, 63 और 142 का दाऊद के जीवन के प्रसंगों से स्पष्ट या बहुत मजबूत ऐतिहासिक संबंध है।

हम दाऊद के भजनों का मिलान उसके जीवन के उन चरणों से करने की पूरी कोशिश करते हैं, जब उनके लिखे जाने की सबसे अधिक संभावना थी। यह एक अनुमानित प्रयास है, सटीक नहीं। भजन संहिता हमें उसके आध्यात्मिक जीवन और उसके

जीवन के विभिन्न मौसमों/चरणों के दौरान परमेश्वर के साथ उसके चलने की अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

**इस चरण के दौरान लिखे जाने की सबसे अधिक संभावना वाले भजन:**

- **भजन 8:** परमेश्वर की महानता और मनुष्य की बुलाहट। यह परमेश्वर की महानता और हम मनुष्यों के छोटेपन की दाऊद की समझ को दर्शाता है।

- **भजन 19:** सृष्टि और उसके वचन के माध्यम से परमेश्वर के प्रकाशन के बारे में दाऊद की समझ को दर्शाता है। यह परमेश्वर के वचन के प्रति दाऊद के सम्मान और उसकी शुद्धता और शक्ति की पहचान को दर्शाता है।

- **भजन 23:** चरवाहे के रूप में यहोवा (नोट: इसके शीर्षक द्वारा कोई तिथि निर्धारित नहीं की गई है, लेकिन यह पारंपरिक रूप से दाऊद के चरवाहे के अनुभव से जुड़ा है)। यह परमेश्वर को एक प्यार करने वाले, देखभाल करने वाले, प्रदान करने वाले, और रक्षा करने वाले चरवाहे के रूप में व्यक्तिगत अंतरंग ज्ञान को दर्शाता है।

- **भजन 29:** यहोवा की महिमा और सामर्थ्य और उसकी शक्तिशाली आवाज़ की दाऊद की समझ को दर्शाता है।